INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

Arts

चित्रकला की एक तकनीक - मेरी कोलाज कला

डॉ. यतीन्द्र महोबे [1]
[1] सहा. प्राध्या चित्रकला, शासकीय महिला महाविद्यालय नरसिंहपुर (म.प्र.)

मुख्य शब्द – चित्रकला, तकनीक, कोलाज कला

Cite This Article: डॉ. यतीन्द र महोबे. (2019). "चतिरकला की एक तकनीक - मेरी कोलाज कला." *International Journal of Research - Granthaalayah*, 7(11SE), 131-134. https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v7.i11.2019.3721.

कला सिर्फ आनंद प्राप्ति का जरिया नहीं है ,बल्कि उसमें जनकल्याण यथार्थता एवं प्रेरणादायक भावना का समावेश भी अनिवार्य है। भारत में पचास प्रतिशत कलाकार ऐसे हैं जिनकी कलाकृतियाँ कला दीर्घाओं में लगी रहती हैं जिनमें आड़ी-तिरछी रेखायें यहाँ-वहाँ फैले रंग के अलावा कुछ भी नहीं होता। आज कुछ कलाकार ऐसे भी है जो कला को सिर्फ आत्मिक आंनद की प्राप्ति का साधन मानते हैं।ये चित्रकला के आधारभूत नियमो का उल्लंघन कर ऐसी कलाकृति तैयार करते है जो सिर्फ स्वान्तः सुखाय है। अतः इस प्रकार की कला जनसामान्य एवं समाज की परवाह किये बगैर निर्मित होती है।मुझे लगता है कि कलाकार में ऐसा या इतना कुछ जरूर होना चाहिए कि कलाकार की अभिव्यक्ति जनसामान्य तक पहुँच जाये।

मैंने पिछले कुछ सालों में कोलाज चित्रों की रचना की है। वैसे तो सभी माध्यम में चित्र रचना करना मुझे पसंद है लेकिन कोलाज अब मेरा सबसे प्रिय माध्यम बन गया है। कोलाज का जन्म 1908 से 1912 के मध्य यूरोपीय चित्रकार जार्ज ब्राक एवं पाब्लो पिकासो के साथ शुरू हुआ।" कलाकृति में कोलाज का प्रयोग करने का श्रेय ब्राक को ही है। कोलाज पद्वति से उनकी रचनाऐं अधिक भौतिक बन गयी ,धनवाद की मन्द रंग संगति में नैसर्गिक चमक आ गयी" ब्राक ने चारकोल के साथ कागज के टुकड़ों का प्रयोग किया हैं और पिकासो ने अपने तैल चित्रों में कोलाज तकनीक का इस्तेमाल करने वाले पहले चित्रकार थे। पिकासो ने 1912 से विभिन्न प्रकार के पैटर्न और बनावट के साथ अलग-अलग टुकड़ों का इस्तेमाल किया हैं । ब्राक, पाब्लो पिकासो, हन्ना होच, हेनरी मातिस आदि कलाकारों ने इस पद्वति को लागू किया ।

"यूरोप मे घनवादी कलाकारों ने अपनी शैली को नया रूप प्रदान करने के लिए अख़बार की कतरनों को कैनवास पर चिपका कर चित्र तैयार किये थे। कई यूरोपीय कलाकारों ने इस पद्वति को अपनाया। कोलाज कला की इस परंपरा को कई कलाकारों ने अपनी कृतियों के सृजन में नवीनता के रूप में भी अपनाया है।"

कोलाज कला वह विधि हैं जिसमें चित्र तल के भाग को विभिन्न तरह से रंगीन कागज व अन्य चित्रित टुकड़ों को या वस्तुओं के टुकड़ों को चिपकाकर संयोजित किया जाता है।भारतीय चित्रकला के इतिहास में राजस्थानी

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585106

चित्रों में भी कोलाज कला की प्रचुरता प्राप्त हैं । वस्त्राभूषणों के चित्रों में भी लोककला के आयाम काँच के टुकड़ों ,पुष्प, कौड़ियाँ को चिपकाया गया है और यही कोलाज का रूप है ।

''हम रोज दर्पण के सामने खडे होकर अपनी छवि देखते हैं । दर्पण को भले ही हम गिरा दें लेकिन वह तो अपनी इच्छा से टूटता है उसके कितने टुकड़ें हो जायेंगे हम नहीं जानते । जब वह टूट जाता है तब हम ही उस बिखरे हुए दर्पण को फिर से जोड़ने के लिए व्याकुल हो उठते है - यह व्याकुलता ही कोलाज की जननी है।'' और उस टूटे दर्पण को पास - पास रखने के बाद उसमें अपनी छवि देखने का जो आनंद है वही कोलाज है। मध्यप्रदेश राज्य के जबलपुर निवासी वरिष्ठ चित्रकार श्री अमृत लाल वेगड़ जी सालों से कलाकृति मे

ISSN- 2350-0530(O), ISSN- 2394-3629(P)
Index Copernicus Value (ICV 2018): 86.20
DOI: 10.5281/zenodo.3585106

कोलाज विधि का प्रयोग किया और लिखा है -''1977 से नर्मदा पद यात्राओ का सिलसिला शुरू हुआ और इसी के साथ दिवंगत हैं कोलाज का भी आरंभ हुआ , तब से जल रंग छूट गया और मैं केवल कोलाज ही बना रहा हूँ । कागज मैं इतनी सफाई से काटता हूँ और इतनी सावधानी से चिपकाता हूँ कि मेरे कोलाज ,कोलाज न लगकर चित्र लगते है। मेरे कुछ कोलाज जलरंग की तरह , कुछ तैलरंग की तरह, तो कुछ कलर लीनोकट जैसें है किंतु यह गलत है। व्याकरण की दृष्टि से कोलाज को कोलाज जैसा ही दिखना चाहिए लेकिन क्या करूँ, मुझे इसी में मजा आता है। मैं व्याकरण को देखूं या अपने मन की खुशी को। ''

आधुनिक कलाकारों ने भी इस विधि को अपनाया है वर्तमान में भी कैनवास पर विभिन्न आकारों के टुकड़ों को चिपकाकर कलाकृति सृजित की जा रही हैं। अपनी कलाकृतियों में नवीनता लाने की कोशिश कलाकार निरंतर कर रहा है।

कोलाज चित्र देखने में बड़े ही सुन्दर और आकर्षक होने के साथ-साथ कलाकार को आर्थिक बोझ से भी बचाते है क्यूँकि इस माध्यम में न ही ऊँचे दामों वाले रंगों का प्रयोग होता है और न ही मँहगें ब्रशों का। पुरानी रंगीन पत्रिकायें आसानी से स्टेशनरी की दुकानों पर सस्ते दामों पर मिल जाती है। और कोलाज निर्माण में पत्रिकाओं के कागज के टुकड़ों का प्रयोग चित्र रचना हेतु किया जाता हैं कोलाज चित्रों का निर्माण करते समय कलाकार को अपने धैर्य का परिचय देना होता है चूकिं कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों को चिपकाना होता है, जिनमें वक्त अन्य माध्यमों की अपेक्षा ज्यादा़ लगता है। मैंने अपनी कलाकृतियों में सिर्फ रंगीन पत्रिकाओं के बारीक टुकड़ों का प्रयोग किया है, मैंने सरलतम विषयों का चयन कर कागज के रंगीन कतरनों से उनमें छाया प्रकाश दिखाने की कोशिश की है। इन चित्रों को दूर से देखने में ऐसा प्रतीत होता है मानो ये चित्र आइल या पोस्टर से निर्मित किये हो। इसमें विशेष बात यह है कि मैं कागज के एक-एक टुकडों को शीट पर फेविकोल के माध्यम से चिपकाता चलता हूँ तब ऐसा प्रतीत होता है कि मैं ब्रुश से बड़े-बड़े स्ट्रोक लगा रहा हँू और हकीकत में ये कागज के टुकड़े ब्रुश के बोल्ड स्ट्रोक जैसे ही प्रतीत होते है। खास बात यह है कि पत्रिकाओं के लिखित वाक्य कटे-फटे टूकड़ों में अपनी अलग छाप छोड़ते हैं। कोलाज में एक टुकड़े से दुसरे टुकडें के बीच की जगह का प्रभाव ही इसकी मुख्य विशेषता है और ये प्रभाव दर्शकों के दिल को छू लेते है।

आज इस तकनीक पर काम करने वाले कलाकार निरंतर कम होते जा रहे हैं । आइल और एक्रेलिक माध्यम ने इनका महत्व कम कर दिया है लेकिन कुछ कलाकार है जो इस तकनीक पर काम करते है वह कागज के अलावा अन्य वस्तुएँ भी प्रयोग में लाते हैं।

कोलाज चित्र रचना करते समय मुझे एक अलग ही आंनद की अनुभूति होती हैं और कला जगत में मैं इस माध्यम द्वारा अपनी अलग पहचान बनाने की कोशिश कर रहा हूँ कोलाज माध्यम अपने आप में एक भिन्न तकनीक है जो सौंदर्यात्मक दृष्टि से परिपूर्ण है। लेकिन आज कलाकार इस तकनीक से दूर होता जा रहा है। अब कलादिर्घाओं में कोलाज देखने में नही आते। इस गुम होती तकनीक को अपनी कला शैली में प्रयोग कर इसे बचाने का मेरा छोटा सा प्रयास है। मैं अपने कुछ कोलाज चित्र इस लेख के साथ संलग्न कर रहा हूँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

[1] चित्रकला के मूल आधार - डॉ. मोहन सिंह मावडी, तक्षशिला प्रकाशन, 98 - ए, हिन्दी पार्क, दरियागंज, नईदिल्ली - 2007।

[2] आधुनिक चित्रकला का इतिहास - र. वि. साखलकर, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर - 2004।
[3] समकालीन कला, अंक 33(जुलाई- अक्टूबर 2007), ललित कला अकादमी, नई दिल्ली ।
[4] समकालीन कला, अंक 34 (नबंवर 2007 - फरवरी 2008), ललित कला अकादमी, नई दिल्ली ।

*Corresponding author.
E-mail address: yatindramahobe@ gmail.com